E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में स्त्री नारी समाज

अनिल शाक्य
शोधार्थी
देवी अहिल्या विष्वविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/11/2025

Paper date Publishing Date

10/11/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.18001006

IMPACT FACTOR
5.924

समकालीन स्त्री–लेखन ने पुरुष समाज द्वारा स्त्री के ऊपर थोपी गई मूल्यों का खंडन करनेवाली कहानियाँ लिखी है। आज की कहानी में छूट गए सच को भरने की कोशिश देखनी हो या कहने का खूबसूरत अंदाज समय से टकराहट देखनी हो या बेखौफ स्त्री की जबान और हिम्मत मैत्रेयी पुष्पा एक प्रतिनिधि कथाकार का रोल निभाती नजर आती हैं। वे पुरुषवादी विचार में, पदावली में भरोसा नहीं करती, यौन शुचिता से वृहत्तर सरोकारों के विषय में उनके पात्र सोचते हैं। तब उनके लेखन में हमें श्स्वतंत्रता के नए अर्थ का प्रकाश फैला दिखाई देता है।

. पुरुष के अनुसार नारी के मूल्य किस प्रकार होते हैं, इसके संदर्भ में शरतचंद्र लिखते हैं कि सेवा –परायण, स्नेहशील, सती और दुःख तथा कष्ट सहन करते हुए मौन रहती है, अर्थात उनके द्वारा पुरूष को कहां तक सुख और सुभीता हो सकता है और कहां तक वे रूपसी है? पुरूष की लालसा और प्रवृत्ति को ये कहां तक निबद्ध तथा तृप्त रख सकती हैं? हम यह बात पृथ्वी का इतिहास खोलकर प्रमाणित कर सकते हैं कि स्त्रियों के मूल्य निश्चित करने के लिए इसके सिवा और कोई मार्ग है ही नहीं'' समकालीन भारतीय समाज में नारी जाति, वर्ण, वर्ग. प्रांत धर्म भेद के बिना उपेक्षित स्थिति ही भोगती है। कहीं पर भी छूट नहीं। स्त्री को मानवाधिकारों से पहचानकर सम्मान देनेवाले पुरूष को उंगलियों में गिने जा सकते हैं। मैत्रेयी पुष्पा का समूचा लेखन सबसे पहले इसी घुटन से दो चार होता है। इसके लिए पुरूष को दोष लगाती है कि ''मर्दों का दिमाग भी एक दिन का तो बना हुआ है नहीं। उसमें भी सदियों का कूड़ा–कचरा रूढियों और खाजों के रूप में बगैर किसी कोशिश के भरा और जमा है।'' मैत्रेयी पुष्पा थोड़े ही समय में अपनी अलग पहचान बनानेवाली नई पीढ़ी की वह चर्चित हिन्दी कथा–लेखिका है। उनकी कहानियों का परिवेश एक निश्चित परिवेश है, यानी ग्रामीण भी है। और नगरीय भी. पर एक कथा लेखिका के रूप में जो छवि मैत्रेयी पुष्पा ने अर्जित की है, उस पर आंचलिकता की मोहर तो लगी ही है। इनके चार कहानी संग्रह चिन्हार, श्ललमनियाँ, गोमा हँसती है और पियरी का सपना, फाइटर की डायी (रिपोर्ताज) हैं, वे सब यही साबित करती हैं। विषय वैविध्य के बावजूद इन कहानियों में एक साम्य है कि एक दो को छोड़कर लगभग सभी कहानियाँ स्त्री को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। ज्ञानरज इनकी कहानियों के बारे में कहते हैं कि ''बेशक कहानियों में व्यक्त–ये दुःख नए नहीं। ग्रामीण स्त्रियों की भूमिकाएँ, देवर, ग्राम प्रधान आदि का व्यवहार भी नया नहीं, लेकिन यहां स्त्रियां अपने दुःखों को महसूस करने और पुरूष–समाज के निरंकुश व्यवहार को समझने की चेतना जरूर है।'' राजेन्द्र इनकी कहानियों को महाश्वेता देवी की आदवासियों की जंगल कथाएँ जैसे धूम मचाई तो नहीं लेकिन छोटे पैमाने पर ऐसी ही प्रभावको मानते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मैत्रेयी पुष्पा कहानियों में नारी जीवन मूल्य के संदर्भ में कई प्रश्न उठाते हैं कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, मानसिक ऐसे सामान्य तौर पर मानव मूल्य, स्त्री जीवन के लिए अवश्य मांगकर स्त्री जीवन में स्थापित करना चाहती हैं। स्त्री को वस्तु से व्यक्ति बनाने की चाह रखती हैं। मैत्रेयी पुष्पा अपनी कहानियों में नारी की स्वतंत्रता की पक्षधर दिखाई पडती हैं। वे नारी को अस्तित्व से व्यक्तित्व तक ले जाने केलिए प्रयत्नशील है। वे कहती हैं कि ष्जहाँ हमारी स्वतंत्र दृष्टि का निषेध होता हो, उसे हम साहित्य कैसे मानें? यहीं से रचनात्मक तनाव के क्षण शुरू होते हैं। इसी प्रक्रिया में सामाजिक अनुकूल से स्वाभाविकता का टकराव होता है। निश्चित ही इस टकराव मंर बहुत कुछ टूटता है, लेकिन नया भी कुछ बनता है। अनदेखा सच, अमान्य रही प्रकृति के नए–नए पक्ष सामने आते हैं। हाँ, बहुत संभव है कि नए पक्ष को परंपरावादियों से मान्यता न मिले। फिर भी रचनाकार की निष्ठा के बिन्दुओं का दायरा खत्म नहीं होताष इनके अनुसार प्रतिरोध दर्ज करना ही साहित्य है। परंपरागत रूप से चली आ रही पुरुष सत्ता के द्वारा स्त्री के लिए बनाई गई जीवन मूल्यों से प्रतिरोध करती हैं इनकी नायिका। आधुनिक परिदृश्य को अनिवार्य बनाकर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती है। स्वतंत्रता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, शिक्षा सामाजिक जागृति परिवेशगत परिवर्तन, पारिवारिक संबंध, समाज में संघर्ष करती, टूटती–बिखरती तो कहीं अपने–आपको स्थापित करती नारी का रूप कहानियों में उभरता है। मैत्रेयी पुष्पा उस वर्ग की नारी के प्रति ध्यान दिया है जिसको अधिकांश लेखिकाओं ने ध्यान नहीं दिया था। उसमें उन्होंने ग्रामीण परिवेश में पली बढ़ी हुई नारी को अपनी कहानियों का पात्र बनाकर उन्हीं की भाषा में उनकी जीवन व्यथा, सुधारवादी रूप, विद्रोह रूप, विद्रोह रूप के आत्मसात करती नारी पात्र को चित्रित किया है।

संदर्भ सूची :–

1. नारी का मूल्य, शरत्चंद्र, पृ. 9.
2. मैत्रीयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, स. विजय बहादुर सिंह उपन्यास, पृ. 174.
3. मैत्रीयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, सं. विजय बहादुर सिंह, पृ. 294.
4. मैत्रीयी पुष्पा के कथात्मक आयाम, डॉ. दया दीक्षित, भूमिका से।